1 तीमुथियुस श्रृंखला

अध्याय 2 : सभी के लिए, हर जगह प्रार्थना करें

रविवार, 26 मार्च, 2017

हम 1 तीमुथियुस पर अपने अध्ययन को आगे बढ़ाते हैं।

आइए 1 तीमुथियुस अध्याय 2 पढ़ें।

1 तीमुथियुस 2:1
अब मैं सबसे पहले यह आग्रह करता हूँ कि विनती, और प्रार्थना, और निवेदन, और धन्यवाद सब मनुष्यों के लिये किए जाएँ,

सबसे पहले

यह प्रार्थना के महत्व को दर्शाता है।

विनती, प्रार्थना और निवेदन—इन सभी का संबंध प्रार्थना करने से है और ये अनिवार्य रूप से हमारी प्रार्थना के विभिन्न अंग हैं। इसलिए हमें इनके अंतर को लेकर बहुत अधिक कठोर (rigid) होने की आवश्यकता नहीं है। फिर भी, अपनी समझ के लिए:

विनती: दया या सुरक्षा के लिए की गई प्रार्थना या याचिका (जैसे एक याचक गिड़गिड़ाते हुए या विनती करते हुए करता है)।
प्रार्थना: अपनी जरूरतों, इच्छाओं या उन चीजों के लिए की गई प्रार्थना जो हमारे पास नहीं हैं।
निवेदन: किसी और के लिए प्रार्थना करना, मुख्य रूप से उनके उद्धार के लिए उनके पक्ष में मध्यस्थता करना।
धन्यवाद: उनके लिए धन्यवाद देना।

सब मनुष्यों के लिये किए जाएं

यहाँ 'मनुष्यों' के लिए यूनानी शब्द *'अंथ्रोपोस* का उपयोग किया गया है जो लिंग-रहित है, जिसका अर्थ *'लोग* है जैसा कि आप कुछ अनुवादों में देखेंगे।

इसका अभ्यास करने का एक तरीका यह है कि हर जगह, हर समय और जब भी संभव हो लोगों के लिए प्रार्थना करें—जब आप सड़क पर चल रहे हों, अपने मोहल्ले में हों, बाज़ार में हों, या कार चला रहे हों—जैसे ही आप लोगों को देखें, अपने हृदय में उनके लिए प्रार्थना उठने दें।

1 तीमुथियुस 2:2
राजाओं और सब ऊँचे पदवालों के निमित्त इसलिये कि हम विश्राम और चैन के साथ सारी भक्ति और गम्भीरता से जीवन बिताएँ।

हमें नागरिक अधिकारियों के लिए भी प्रार्थना (विनती, प्रार्थना, निवेदन और धन्यवाद) करने का निर्देश दिया गया है ताकि लोग:

(A) चैन और सुख के साथ जीवन बिता सकें, और
(B) परमेश्वर के प्रति पूरी भक्ति और गंभीरता के साथ जीवन जी सकें।

हमें इसके लिए प्रार्थना करने का निर्देश दिया गया है क्योंकि हमारी प्रार्थनाएं वास्तव में प्रभाव डालती हैं।

हमारी प्रार्थनाएँ (A) और (B) इन दोनों पहलुओं पर प्रभाव डालती हैं।

यह ध्यान रखें कि इस समय नीरो क्लॉडियस सीज़र रोम के सम्राट के रूप में शासन कर रहा था। ईस्वी सन् 64 में, नीरो के समय में रोम का लगभग 70% हिस्सा जलकर खाक हो गया था और कई लोगों का मानना है कि नीरो ही इसे जलाने का जिम्मेदार था ताकि वह अपने लिए एक बड़ा महल बनवा सके। नीरो ने इसका दोष मसीहियों पर डाल दिया और इस प्रकार ईस्वी सन् 64 में रोम में मसीहियों का भयानक सतावट शुरू हो गया। नीरो को अक्सर मसीहियों को जानवरों के आगे फिंकवाने, मसीहियों को मशालों की तरह जलाने और अपने ऐश-ओ-आराम और भोग-विलास वाले जीवन से लोगों का मनोरंजन करने के लिए याद किया जाता है।

नीरो वही सीज़र था जिससे पौलुस ने तब अपील की थी जब यहूदियों द्वारा उस पर अन्यायपूर्ण आरोप लगाए गए थे और उसे कैसरिया में झूठे तरीके से कैद किया गया था (प्रेरितों के काम 25:11)। रोम की अपनी यात्रा के दौरान, एक स्वर्गदूत ने पौलुस को सूचित किया था कि वह सीज़र के सामने खड़ा होगा (प्रेरितों के काम 27:24)। प्रेरित को रोम ले जाया गया और नीरो द्वारा अंततः उसके मामले की सुनवाई करने से पहले दो साल तक घर में कैद रखा गया (प्रेरितों के काम 28:30)। प्रारंभ में, प्रेरित अपनी अपील जीत गया और उसे कुछ समय की राहत मिली, जिस दौरान उसने तीमुथियुस और तीतुस से मिलने के

लिए यात्रा की थी। बाद में नीरो द्वारा उसे दोषी ठहराया गया। इतिहासकार यूसेबियस के अनुसार, नीरो ने पौलुस का सिर कटवा दिया था और पतरस को क्रूस पर चढ़वा दिया था।

1 तीमुथियुस 2:3,4
3यह हमारे उद्धारकर्ता परमेश्‍वर को अच्छा लगता और भाता भी है,
4जो यह चाहता है कि सब मनुष्यों का उद्धार हो, और वे सत्य को भली भाँति पहचान लें।

यह हमारे परमेश्वर की दृष्टि में उत्तम और भली बात है कि हम सब लोगों के लिए प्रार्थना करें—विशेषकर उनके लिए जो नागरिक अधिकारियों के पदों पर हैं—ताकि हम (अ) शांत और चैन का जीवन जी सकें, और (ब) पूरी भक्ति और परमेश्वर के प्रति आदर के साथ जीवन व्यतीत कर सकें। इस प्रकार प्रार्थना करना परमेश्वर की उस इच्छा को पूरा करने की ओर भी ले जाता है—जो यह है कि हर एक मनुष्य का उद्धार हो और वे सत्य की पहचान तक पहुँचें।

हम यहाँ पद 4 में परमेश्वर के हृदय की इच्छा को देखते हैं—परमेश्वर चाहता है कि हर एक जन का उद्धार हो और वे सत्य को गहराई से जानें। इसलिए हम जो कुछ भी करते हैं—चाहे हमारी प्रार्थना हो या हमारा परिश्रम—जब वह परमेश्वर के मार्गदर्शन में इस इच्छा को पूरा करने की ओर निर्देशित होता है, तो हम जानते हैं कि यह परमेश्वर को प्रसन्न करने वाला होगा।

1 तीमुथियुस 2:5-7
5क्योंकि परमेश्‍वर एक ही है, और परमेश्‍वर और मनुष्यों के बीच में भी एक ही बिचवई है, अर्थात् मसीह यीशु जो मनुष्य है।
6जिसने अपने आप को सब के छुटकारे के दाम में दे दिया, और उसकी गवाही ठीक समय पर दी गई।
7मैं सच कहता हूँ, झूठ नहीं बोलता, कि मैं इसी उद्देश्य से प्रचारक और प्रेरित और अन्यजातियों के लिये विश्‍वास और सत्य का उपदेशक ठहराया गया।

बाइबल यीशु मसीह की अद्वितीयता और केवल यीशु मसीह के माध्यम से मिलने वाले उद्धार के प्रावधान के बारे में बहुत स्पष्ट है। वही एकमात्र ऐसे हैं जिन्होंने स्वयं को सब के लिए छुड़ौती के दाम के रूप में दे दिया।

छुड़ौती शब्द का यूनानी मूल *'एंटीलूट्रॉन'* है, जिसका अर्थ है छुटकारा पाने की कीमत या छुड़ाने का मोल। यह किसी बंदी (दास या कैदी) के छुटकारे या मुक्ति के लिए चुकाई गई कीमत होती है। उन्होंने अपने एक जीवन को सभी के जीवन के छुटकारे के लिए दे दिया। इसलिए, हर एक व्यक्ति अब स्वतंत्रता में बाहर कदम रख सकता है क्योंकि कीमत चुका दी गई है। शैतान हमें अपना दास बनाकर रखे हुए

था, परंतु यीशु ने स्वयं को पिता के सामने एक मूल्य के रूप में अर्पित कर दिया, ताकि अब हर व्यक्ति पर शैतान का कानूनी दावा पूरी तरह से रद्द हो जाए।

हम यहाँ इसी बात को प्रार्थना के द्वारा प्रभावी बनाने और इस सुसमाचार की घोषणा (प्रचार) करने के लिए हैं, ताकि लोग इस सत्य को जान सकें, यीशु को स्वीकार कर सकें और उद्धार पा सकें।

पौलुस एक प्रचारक, प्रेरित और उपदेशक थे। हम यह भी जानते हैं कि वे एक भविष्यद्वक्ता के रूप में भी चले (क्योंकि उन्होंने नए नियम के कई भविष्यवाणी से भरे पत्र लिखे) और कई मायनों में जहाँ उन्होंने कलीसियाओं की स्थापना की, वहाँ एक पास्टर के रूप में भी सेवा दी। यह हमें सिखाता है कि प्रभु यीशु की इच्छा के अनुसार, एक व्यक्ति एक से अधिक सेवकाई के वरदानों में कार्य कर सकता है।

पौलुस की सेवकाई मुख्य रूप से अन्यजातियों के लिए थी। परमेश्वर आपको भी किसी विशेष समूह या लोगों के लिए बुला सकता है—यह कोई छोटा या बड़ा समुदाय, कोई भौगोलिक स्थान, राष्ट्र, या जाति आदि हो सकती है।

1 तीमुथियुस 2:8-10
8इसलिये मैं चाहता हूँ कि हर जगह पुरुष, बिना क्रोध और विवाद के पवित्र हाथों को उठाकर प्रार्थना किया करें।
9वैसे ही स्त्रियाँ भी संकोच और संयम के साथ सुहावने वस्त्रों से अपने आप को संवारे; न कि बाल गूँथने और सोने और मोतियों और बहुमोल कपड़ों से,
10पर भले कामों से, क्योंकि परमेश्वर की भक्ति करनेवाली स्त्रियों को यही उचित भी है।

जो कुछ भी कहा गया है, उसके प्रकाश में पौलुस मुख्य बिंदु पर वापस आता है: कि पुरुष (यूनानी शब्द अनेर = नर/पुरुष) हर जगह प्रार्थना करें।
प्रार्थना के साथ समर्पण (हाथ उठाना), पवित्रता (पवित्र हाथ), बिना क्रोध और बिना झगड़े (या विवाद या संदेह) का होना आवश्यक है।
स्त्रियों को भी प्रार्थना में सम्मिलित होना चाहिए और जैसे पुरुषों को पवित्र, क्रोधरहित और विवादरहित होना चाहिए, वैसे ही स्त्रियों को शालीन वस्त्र पहनने और भले कामों में लगे रहने की आवश्यकता है, ताकि वे अपनी भक्ति को प्रमाणित कर सकें।

हम पवित्रशास्त्र के इस अंश का यह अर्थ नहीं निकाल सकते कि स्त्रियों को गहने बिल्कुल नहीं पहनने चाहिए। पवित्रशास्त्र की व्याख्या शेष पवित्रशास्त्र के प्रकाश में की जानी चाहिए। क्या शेष पवित्रशास्त्र स्त्रियों को सोना, मोती पहनने, बाल गूँथने और कीमती कपड़े पहनने से पूरी तरह रोकता है? इसका उत्तर है 'नहीं'। एक महत्वपूर्ण उदाहरण पर विचार करें, जो अब्राहम की पत्नी सारा का है। सारा को 1

पतरस 3:1-6 में अनुसरण करने योग्य उदाहरण बताया गया है। फिर भी हम जानते हैं कि उस समय स्त्रियाँ आभूषण और गहने पहनती थीं (उत्पत्ति 24:22,53)।

1 तीमुथियुस 2:11-15
11स्त्री को चुपचाप पूरी अधीनता से सीखना चाहिए।
12मैं कहता हूँ कि स्त्री न उपदेश करे और न पुरुष पर आज्ञा चलाए, परन्तु चुपचाप रहे।
13क्योंकि आदम पहले, उसके बाद हव्वा बनाई गई;
14और आदम बहकाया न गया, पर स्त्री बहकाने में आकर अपराधिनी हुई।
15तौभी स्त्री बच्चे जनने के द्वारा उद्धार पाएगी, यदि वह संयम सहित विश्वास, प्रेम, और पवित्रता में स्थिर रहे।

[नोट: कृपया ए.पी.सी. के निःशुल्क प्रकाशन, "परमेश्वर का भवन" के अध्याय 22 में अतिरिक्त जानकारी देखें]

ऐसा प्रतीत होता है कि पवित्रशास्त्र का यह अंश स्त्रियों को उपदेश देने से पूरी तरह रोकता है। हमें इसकी व्याख्या निम्नलिखित पहलुओं के प्रकाश में करनी होगी:

A. पौलुस की अपनी सेवा की पद्धतियाँ,
B. वह संदर्भ जिसमें पौलुस ने तीमुथियुस को यह पत्र लिखा था, और
C. शेष पवित्रशास्त्र के प्रकाश में।

A. पौलुस की अपनी सेवा की पद्धतियाँ

पौलुस ने अपनी सेवकाई में स्त्रियों को किसी भी स्तर की ज़िम्मेदारी में सम्मिलित होने से नहीं रोका। रोमियों 12 में वह दिखाता हैं कि कलीसिया के सदस्यों को मिलने वाले कार्यात्मक वरदानों में से एक 'उपदेश देना' है, साथ ही भविष्यद्वाणी और नेतृत्व भी है, और ये लिंग-विशिष्टता के बिना सभी विश्वासियों में वितरित किए जाते हैं। पवित्र आत्मा के वरदान (1 कुरिन्थियों 12) लिंग-विशिष्टता के बिना दिए जाते हैं और पौलुस सभी (पुरुषों और स्त्रियों) को भविष्यद्वाणी करने और उपदेश देने के लिए प्रोत्साहित करते हैं (1 कुरिन्थियों 14:26)।
सेवकाई के वरदान (इफिसियों 4:11) लोगों को दिए जाते हैं, चाहे वे पुरुष हों या स्त्री।
अक्विला और प्रिसकिल्ला (पति और पत्नी) पौलुस की सेवकाई टीम का हिस्सा थे और उन्होंने उन्हें इसी रूप में मान्यता दी (रोमियों 16:3-4)।
पौलुस ने फीबे को एक स्त्री अगुआ/डीकन के रूप में मान्यता दी (रोमियों 16:1-2)।
पौलुस ने यूनियास को एक स्त्री अगुआ, सह-कैदी, और अन्य प्रेरितों द्वारा सम्मानित व्यक्ति के रूप में मान्यता दी, जो संभवतः स्वयं भी एक प्रेरित थी (रोमियों 16:7)।

B. वह संदर्भ जिसमें पौलुस ने तीमुथियुस को पत्र लिखा था

पौलुस अपने पत्रों में कुछ ऐसी बातों को संबोधित करता हैं जो उन कलीसियाओं के लिए विशिष्ट होती हैं जिन्हें वह लिख रहा था। उदाहरण के लिए, उदाहरण के लिए, वह 1 कुरिन्थियों 11 में स्त्रियों के सिर ढकने का मुद्दा उठाता है, लेकिन स्पष्ट रूप से कहता है कि इस प्रकार का रिवाज अन्य कलीसियाओं में नहीं है (1 कुरिन्थियों 11:16)। इसी प्रकार, हर किसी को (पुरुष और स्त्री) पवित्र आत्मा के वरदानों के अभ्यास में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करते हुए, वह इस बारे में विशिष्ट निर्देश देता है कि कब स्त्रियों, भविष्यद्वक्ताओं और अन्य भाषा में संदेश देने वालों को चुप रहना चाहिए (1 कुरिन्थियों 14:28, 30, 34)।

इसी तरह, 1 तीमुथियुस 2 में स्त्रियों के कलीसिया में चुप रहने के लिए पौलुस एक स्थानीय संदर्भ में लिखता है। ध्यान रखें कि इफिसुस एक ऐसा शहर था जो डायना देवी की पूजा करता था और उस शहर में सब कुछ पहले इसी देवी के इर्द-गिर्द केंद्रित था।

रिचर्ड और कैथरीन क्लार्क क्रोगर अपनी पुस्तक *"आई सफर नॉट अ वुमन"* में बताते हैं कि पहले शताब्दी की कलीसिया में डायना की स्त्री पुजारिनों से संबंधित कुछ पंथ-पूजा प्रथाएँ प्रवेश कर गई थीं। ये पुजारिनें यौन संबंध और आध्यात्मिकता के बारे में निन्दात्मक विचारों को बढ़ावा देती थीं, और वे कभी-कभी ऐसे अनुष्ठान करती थीं जिनमें वे पुरुषों को श्राप देती थीं और स्त्री श्रेष्ठता की घोषणा करती थीं। पौलुस इफिसियों से जो कह रहा था, वह संभवतः यह था: "मैं किसी स्त्री को इन पंथीय विधर्मों की शिक्षा देने की अनुमति नहीं देता, और न ही मैं उन्हें मूर्तिपूजक अनुष्ठान करके पुरुषों के अधिकार को हड़पने की अनुमति देता हूँ।" वह यह नहीं कह रहा था, जैसा कि कुछ मसीहियों ने मान लिया है, कि "मैं भक्तिपूर्ण मसीही स्त्रियों को बाइबल सिखाने की अनुमति नहीं देता।" [जे. ली ग्रेडी, "टेन लाइज़ द चर्च टेल्स वूमेन" में, लेख: 20050204105114, www.spiritledwoman.com में, स्ट्रैंग कम्युनिकेशंस द्वारा]

यहाँ मुख्य मुद्दा स्त्रियों की श्रेष्ठता पर सांस्कृतिक शिक्षा के आलोक में, नेतृत्व और उपदेश के मामले में पुरुषों के प्रति अधीनता और समर्पण का है। पौलुस उन्हें परमेश्वर के शासन में पुरुष की प्रधानता की याद दिलाते हुए कहता है कि "आदम पहले बनाया गया"। इसलिए, यह स्त्रियों को परमेश्वर की सेवा करने या सेवकाई में आने से रोकने वाली कोई निषेधाज्ञा नहीं है, बल्कि उस सांस्कृतिक संदर्भ में स्थानीय कलीसिया के परिवेश के भीतर पुरुषों के प्रति सक्रिय अधीनता और उचित आचरण का एक नियम है।

C. शेष पवित्रशास्त्र के प्रकाश में

पूरे पवित्रशास्त्र में, पुराने और नए दोनों नियमों में हम देखते हैं कि स्त्रियाँ पवित्र आत्मा द्वारा अभिषेक की गई हैं और परमेश्वर द्वारा उपयोग की गई हैं। हमारे पास मरियम, दबोरा, एस्तेर, रूत, हन्ना

भविष्यद्वक्ति और फिलिप्पुस की पुत्रियों के उदाहरण हैं। पवित्र आत्मा के उंडेले जाने का वादा बेटों और बेटियों दोनों के लिए है (प्रेरितों के काम 2:17-18) और दोनों ही भविष्यद्वाणी करेंगे।

1 तीमुथियुस 2:14

और आदम बहकाया न गया, पर स्त्री बहकाने में आकर अपराधिनी हुई।

यह वचन यह संकेत नहीं देता कि स्त्रियों को आसानी से ठगा जा सकता है। प्रेरित पौलुस केवल वही बता रहे हैं जो उत्पत्ति 3:1-7 में हुआ था। सांप ने सीधे हव्वा से बात की, उससे झूठ बोला, परमेश्वर की बातों को मरोड़ा, उसे धोखा दिया (2 कुरिन्थियों 11:3) और उसे पहला फल खाने के लिए उकसाया। सांप को आदम से बात करने की जरूरत नहीं पड़ी। हव्वा ने वह फल आदम को दिया और उसने बिना किसी सवाल के उसे खा लिया। दोनों ने परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन किया, दोनों ने पाप किया और दोनों का पतन हुआ।

1 तीमुथियुस 2:15

तौभी स्त्री बच्चे जनने के द्वारा उद्धार पाएगी, यदि वह संयम सहित विश्वास, प्रेम, और पवित्रता में स्थिर रहे।

इसका सीधा अर्थ यह है कि उत्पत्ति 3:16 के प्रकाश में, बच्चा जनने के दौरान पत्नी सुरक्षित रखी जाएगी। यहाँ 'बचाए जाने' के लिए यूनानी शब्द *'सोज़ो'* का उपयोग किया गया है, जो उद्धार के लिए एक सर्व-समावेशी शब्द है।

तो प्रेरित पौलुस इस समय स्त्रियों और प्रसव के बारे में बात क्यों करते हैं? फिर से, वचन 15 को बाइबल के संदर्भ और स्थानीय संदर्भ दोनों में समझना होगा। हम जानते हैं कि पतन का परिणाम यह था कि स्त्री बहुत पीड़ा के साथ बच्चों को जन्म देगी (उत्पत्ति 3:16)। दूसरी ओर, स्थानीय संदर्भ भी महत्वपूर्ण है। देवी "डायना" (लैटिन में, यूनानी में "आर्टेमिस") विरोधाभासों की देवी थी। उसे छोटे बच्चों की रक्षक और प्रसव के दौरान महिलाओं की संरक्षिका माना जाता था। वह प्रसव पीड़ा में महिलाओं की रक्षक थी, लेकिन यह भी कहा जाता था कि "आर्टेमिस" के तीर प्रसव के दौरान उन्हें अचानक मृत्यु दे देते थे। "आर्टेमिस" चंगाई की देवी थी, लेकिन वह कुष्ठ रोग, रेबीज और यहाँ तक कि गठिया जैसी बीमारियाँ भी लाती और फैलाती थी। इसलिए, प्रेरित पौलुस "डायना" की पूजा के स्थानीय सांस्कृतिक प्रभाव के एक अन्य पहलू को संबोधित कर रहे हैं, और विश्वासियों को आश्वस्त कर रहे हैं कि यीशु के कारण विश्वास करने वाली स्त्रियाँ प्रसव के दौरान सुरक्षित रहेंगी।

पुरुषों की तरह, स्त्रियों को भी विश्वास, प्रेम, पवित्रता और आत्म-संयम में बने रहना है।

मुख्य शिक्षा:

परमेश्वर चाहता है कि हम हर जगह सभी के लिए प्रार्थना करें-एक शांत और शांतिपूर्ण जीवन के लिए, ताकि हम भक्ति और आदर के साथ जी सकें, और लोगों को उद्धार पाते हुए और सत्य के ज्ञान तक पहुँचते हुए देख सकें।

वेबसाइट संदर्भ:

नीरो के बारे में ऐतिहासिक जानकारी के लिए संदर्भ:

https://www.christiancourier.com/articles/623-nero-caesar-and-the-christian-faith

इफिसुस की देवी डायना पर संदर्भ:

http://www.ephesus.us/ephesus/mythology_of_artemis.html

http://www.biblestudytools.com/encyclopedias/isbe/diana-artemis.html

https://www.biblegateway.com/resources/all-women-bible/Diana-Ephesians

उपयोगी संसाधन

हर रविवार सुबह 10:30 बजे (भारतीय समय, GMT+5:30) हमारी ऑनलाइन संडे चर्च सेवा का लाइव प्रसारण देखें। पवित्र आत्मा से परिपूर्ण, अभिषिक्त आराधना, वचन और चंगाई, चमत्कार तथा छुटकारे की सेवा।
यूट्यूब:https://youtube.com/allpeopleschurchbangalore
वेबसाइट: https://apcwo.org/live

हमारी अन्य वेबसाइट्स और निःशुल्क संसाधन:
चर्च: https://apcwo.org
निःशुल्क संदेश: https://apcwo.org/resources/sermons
निःशुल्क पुस्तकें: https://apcwo.org/books/Hindi
दैनिक भक्ति-वचन: https://apcwo.org/resources/daily-devotional
यीशु मसीह: https://examiningjesus.com
बाइबल कॉलेज: https://apcbiblecollege.org
ई-लर्निंग: https://apcbiblecollege.org/elearn
वीकेंड स्कूल्स: https://apcwo.org/ministries/weekend-schools
काउंसलिंग: https://chrysalislife.org
संगीत: https://apcmusic.org
मिनिस्टर्स फेलोशिप: https://pamfi.org
चर्च ऐप: https://apcwo.org/app
चर्चेस: https://apcwo.org/ministries/churches
विश्व मिशन: https://apcworldmissions.org